श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✤

卐 श्रीमती सर्वेश्वरी श्रीचारुशीलायैनमः श्रीमद्धनुमते नमः 卐

✤ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ✤

* अथ श्री स्वामी हर्य्याचार्य जी कृत *

श्री जानकी गीतम्

मंगला चरणम् ✤

वामे श्री जानकी यस्य दक्षिणे चारुशीलिका ।
पुरतः श्री प्रसादा च विबन्दे रसिकेश्वरम् ।।

जिनके बायें तरफ श्री जानकीजी, दाहिनी तरफ श्रीचारुशीला जी आगे में श्री प्रसादाजी इस प्रकार विराजमान जो हैं, ऐसे रसिकेश्वर श्रीराम जी को नमस्कार हो ।।

।। अथ प्रथम सर्गः ।।

ग्रन्थकार मंगलम् ।

✤ माला भरणी छंदः

नवराग भरां चिदात्मवृत्तेः, सरयू कुञ्ज गृहेषु राघवस्य ।
जनकात्मजया समं समन्ता, द्विजयन्ते रति केलयोऽनवद्याः ।।१

नित्य नवीन अनुराग भार से सत्कार युक्त चैतन्य आत्मवृत्ति (सब साज समाज सच्चिदानन्द) वाले श्री राघवजी श्री जनकात्मजा जी के साथ श्री सरयू तट कुंज घरों में होने वाली सर्व दोष रहित सच्चिदानन्द मयी केलियां निरन्तर विजय को प्राप्त हों ।।१।।

साहित्य दीव्य दरबिन्द मरन्दमत्त-
चित्तद्विरेफपतिरम्बुज नेत्रसक्तः ।
श्री जानकी रघुवर प्रथितां सुकेलि-
माधूर्य्यं मंजुल पदां हरिरातनोति ।।२।।

दिव्य साहित्य शास्त्र रूपी अद्भुत कमल के विकसित होने से विलास रूपी पराग रस पानोन्मत्त चित्त वाले भ्रमर राज श्री युगल सरकार के कमल सदृश नेत्रोल्लास आशक्त चित्त श्री प्रिया प्रीतम पदानुरागी श्री हर्य्याचार्य जी महाराज श्री जानकी रमण जू की प्रसिद्ध सुन्दर दिव्य केलियों को अति माधुर्य्यं रस रागों से कोमल भावयुक्त पदों को विस्तार करते हैं ।।२।।

श्री रामस्य समस्तभूपतिमणेर्यन्नृत्य कौतूहलम्-
तत्तस्मिन्नहि दुर्घटं रसिकता सम्भाजि सर्वेश्वरे ।
इत्थं यत्खलु भारती भगवतः सम्वीक्ष्यते विष्फुट-
म्बाल्मीकस्य ततो रघूद्वहधियो नृत्यं वितन्वन्तु तत् ।।३

राजराजेश्वर भूप शिरोमणि श्री चक्रवर्ती कुमार श्रीरामजी के लिए रासलीला अयुक्त नहीं हैं, क्योंकि रसिकता के एक मात्र पात्र आप ही हैं। एक तो आप सर्वेश्वर, रस स्वरूप हैं "रसोवैसः- तैत्तिरीयो०" ब्र० अनु० ७ इस मंत्र से परमात्मा को रस स्वरूप कहा गया है दूसरे आप परात्पर ब्रह्म स्वतन्त्र ईश्वर हैं। इसी प्रकार भगवान श्री मद्बाल्मीकी जी की बाणी भी साफ २ दीख पड़ती है। (यथा बाल्मीकीये—

उपानृत्यंञ्च राजानं नृत्यगीत विशारदः ।
वालाश्च रूप वत्यश्च स्त्रियः पानवशानुगाः ।।२०।।
मनोभिरामा रामास्ता रामो रमयतांम्बरः ।
रमयामास धर्मात्मा नित्यं परं भूषितात् ।।२१।। उत्तर० स० ४२

संगीत पण्डिता अतिसय रूपवती वाला स्त्रियायैं मधु मैरेय पान के अतिसय बशीभूत होने पर विलाश रंग में राजाधिराज श्रीरामचन्द्र जी के अत्यन्त समीप में नृत्य गीत किये कराय के प्रसन्न किया। रमण करने वालों में सर्वश्रेष्ठ धर्मात्मा श्री रामजी ने मन रमणीया उन रामागण समूह में अनेक प्रकार के वस्त्रा-

भूषण नित्य नवीनता पूर्वक रमण किया।

अतः श्री रामचन्द्र जी का यह रास रंग है, श्री रघुश्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी में बुद्धि लगाने वाले (रसिक श्रेष्ठ) भक्तजनों इस श्री सीताराम रास रस का अपने भावना में विस्तार करो ॥३॥

भवति भो रसिका रघुनन्दने-
जनकजा रमणे यदि मानसम् ।
सरस काव्य कलांचित सत्पदां-
हरिगिरं श्रृणुताति मृदुं तदा ॥४॥

हे श्री रसिक जनों यदि आप लोगों का श्री जानकीरमण रघुनन्दनजी में मन लगा हो तो तब यह अति सरस काव्य की कलाओं से सुशोभित सुन्दर अति कोमल पदों में रचना किया हुआ मेरी (श्री हर्य्याचार्य जी महाराज की) वाणी को सुनिये ॥४॥

॥ ललित रागे-त्रिताली ताले ॥

रघुकुल कमल विभाकर सुखसागर हे-
निजजन मानस वास जयजय दाशरथे ।ध्रु०।
नील नलिन रुचि सुन्दर गुणमन्दिर हे-
पीत बसन मृदु हास जयजय दाशरथे ॥१॥
जनकसुता हित पूजन वर कूजन हे ।
दशमुख वंश हुतास जयजय दाशरथे ॥२॥
बचसि हरे रसशालिनि वस पालिनि हे ।
निर्धुतनत भवपास जय जय दाशरथे ॥३॥

हे रघुकुल रूपी कमल बन को खिलाने वाले सूर्य हे सुख के समुद्र हे निजी भक्तजनों के हृदय कमल में बास करने वाले हे चक्रवर्तीन्द्र नन्दन दाशरथे आपकी जय जयकार हो । हे नील कमल की कान्ती सदृश स्याम सुन्दर ! हे शुभ गुणों के मन्दिर पीत वस्त्र धारण करने वाले, तथा मन्द मुसुकाने वाले, प्रीतम श्री

चक्रवर्ती दशरथ नन्दन आपकी जय हो जय हो ।।

हे श्री जनकराज तनया जी के परम हितकारक, पुज्यारी सुन्दर स्तुति करने वाले, हे दशमुख वंश नाशक अग्निदेव, हे दाशरथे आपकी जय हो। परम दिव्य रस से भरे मुफ हरि (श्री हर्य्याचार्य स्वामी जी) के रसिकों को पालन, तृप्ति दायक वचनों में हे प्रिय आप निवास कीजिये। हे शरणागतों के भवपाश को नाश करने वाले हे चक्रवर्ती कुमार आपकी जय हो जय हो ।।५।।

बन्दी कृत मुनिबृन्दममोघं, मन्दीकृत सुररिपुब्रजम् ।
देवं निरुपम सम्मदकन्दं रामं, भजत सच्चिदानन्दम् ।।६।।

मुनि मननशील सत्पुरुषों को जिन्होंने अपने सद्गुण रस्सियों से बांधकर बन्दी बना लिया है अर्थात आपके गुणगणों को गुनकर मुनिबृन्द आपको नमस्कार करते हैं तथा देवताओं अपने भक्तों के शत्रु समूह को जिन्होंने नीचा दिखा दिया है ऐसे परात्परदेव अनूपम सच्चिदानन्द कन्द अक्षय परमानन्द श्रीरामचन्द्र जी का सब भक्तजन भजन करें ।।६।।

गान्धार रागे— एक ताली ताले ।

जय जय जानकि रघुपति दयिते,
विधि शिव शुक सनकादिकमहिते ।
देवि शरणं तव करुणा,
अभिलषिता त्रिभुवन गुरुणा ।।ध्रु०।।
पद नखर द्युति विनमितचन्दे,
निजपति पद परिचरण वितन्द्रे ।।१।।
दशन शिखर किरणाञ्चि बदने,
प्रिय हृदयार्पित नूतन मदने ।।२।।
स्थिर चपलावलि बन्दित देहे,
हरिभणिते वस मंजुल गेहे ।।३।।७।।

हे श्री जानकी हे रघुपति प्राण प्रिये आप की जय हो जय हो । हे विधि शिव शुक सनकादिकों से पूजिते हे देवि ब्रह्मा विष्णु महेश के भी गुरू त्रिपाद विभूति अधिनायक श्रीरामचन्द्र जी के भी अभिलाषा को पूर्ण करने वाली आपकी करुणा की मैं (कवि) शरणागत हूं । हे अपने चरण नख प्रभा से चन्द्रमा को नम्र करने वाली तथा अपने प्रीतम के चरण सेवा में सावधान रहने वाली आपकी जय हो । हे अपने मुखस्थ दन्त पंक्ति झलक से प्रकाशमान मुख चन्द्र वाली तथा अपने प्रियतम के हृदय में नित्त नये सुख विलास उत्पन्न करने वाली आपकी जय हो। हे स्थित विजलियों सदृश अनन्त शक्तियों से वन्दित चरण वाली आप हर्य्याचार्य रचित काव्य के अन्दर अपना सुन्दर घर मानकर निवास कीजिये ॥७॥

श्लोक—मधून्मदैर्वीक्ष्य मधुव्रतौघै—
विगुञ्जितां कुंजतर्तिसरय्वाः ।
रामोविहर्त्तुं मिथिलेन्द्र पुत्र्या—
सार्द्धं वितेने तरुणीसमाजम् ॥८॥

पुष्प पराग मधुपान से उन्मत्त भ्रमर समूहों से गुन्जायमान श्री सरयू तट वाले कुन्ज घरों को देखकर श्री रामचन्द्रजी ने श्री मिथिलेश राज नन्दिनी जू के साथ बिहार करने की इच्छा से तरुणी नायिकाओं का समाज विस्तार रचना युक्त किया ॥८॥

आगत्य सीतान्तिकमाशु काचिद्धेमाभिधा चारुतनुर्वयस्या ।
अशोक वाटी घट्टितानि भर्त्तुर्निरूपयामास विचेष्टितानि ॥९॥

सुन्दर श्री विग्रह वाली समवयस्का कोई हेमा नाम की श्री सीता सखी ने श्री सीताजी के समीप में आकर श्री अशोक वाटिका में होने वाली श्री प्रियतम जू की समस्त चेष्टाओं का वर्णन किया है ॥९॥

विभास रागे-त्रितालि ताले ।।३।।

मृदुल रसाल मुकुल रस तुन्दिल पिक निकर स्वनभासे ।
माधविका सुमनो नव सौरभ निर्भर संकुलितासे ।।१।।
विलसति रघुपति रति सुख पुंजे ।
निर्मल मलयज कुङ्कुम पंकिल तनुरिह वर तनुकुंजे ।।२।।
विसम विशिख कर नखर निचय, सम किंशुक कुसुम कराले ।
मानवती गण मान विदारिणि, चंचल मधुकर जाले ।।३।।
धृत मकरन्द सुमन्द गन्ध, वह भाजि विराजित शोभे ।
बिबिधवितान कान्ति परिशीलिनि, जनित युवतिजन लोभे ।।४
हरि परि रचित मिदं मधु, वर्णन मनु रघुनाथ मुदारम् ।
पिबत वुधा मधु मधुर पदावलि, निरुपम भजन सुधारम् ।।१०

निर्मल चन्दन कुंकुमादि व अंगरागादि परिलिप्त अंग वाले श्री प्राण बल्लभ जू अत्यन्त आनन्द बर्द्धक कुञ्ज में सर्वोत्तम रति विलास सुख समूह में विहार कर रहे हैं । जिस कुंज में रस टप-कते हुये सुकोमल आम्र नवीन बौरों का स्वाद लेते हुये कोकिलाओं का कल्लोल मचा हुआ है और वासन्तिक पुष्प समूहों से नये २ सुगन्ध बन लता कुंजों में दशो दिशा में सुगन्ध छाई हुई है जहां शोभा परिपूर्ण है । तिस पर भी विषम वाँण काम के वाणों के सदृश अथवा काम रूपी सिंह के करांगुली नखों के सदृश पलास के फूल बड़े कराल तीखे समूह के समूह खिले हुये हैं मानवती नाय-काओं के मान को विदीर्ण करने वाला भ्रमरों का समूह गुञ्जाय-मान हो रहा है । मन्द सुगन्ध शीतल वायु पुष्पों के पराग को लेकर दौड़ते हुये अतिशय शोभायमान हो रहा है । रंग २ के विविध लता कुंजादि अनेकों वितान युक्त महलों आदि की कान्ती बन को प्रकाशमान कर रही है । जिसको देख कर युवती जन बन बिहार में अतिशय लुब्ध हो रहे हैं । श्री हर्य्याचार्य रचित यह वसन्त का वर्णन श्री रघुनाथ जी की उदार लीला रस भरा

हुआ है । विद्वान लोग इस महामाधूर्य अमृत रस भरी पदावली का रसपान करें । जिससे श्री सीताराम भजन की अनूपम सुद्धावस्था प्राप्त हो ।।१०।।

श्लोक—

श्रुत्वा बसन्त श्रियमाशु कान्तां,
जातस्पृहासौ जनकात्मजासीत् ।
अथावद श्चारुमुखी चलाक्षी:,
सानन्दमेनां चरितानि पत्युः ।।११।।

बसन्त बहार की अद्‌भुत शोभा को सुनकर अतिशय प्रकाशवती श्री जानकी जी को अपने प्रीतम जू से मिलने की अतिशय उत्कण्ठा प्राप्त हुई इसी बीच में श्री चारुमुखी नाम की एक दूसरी सखी बड़ी चंचल दृष्टी से अति प्रसन्नता पूर्वक ताकती हुई श्री प्रीतम जू के चरित्रों को गान करके श्री स्वामिनी जू को सुनाने लगी ।।११।।

रामकली रागे-त्रितालिताले ।।४।।

क्रीड़ति रघुमणि रिह मधु समये,
पश्य कृशोदरि भूपति तनये ।।१।।
जानकि हेवर्द्धित यौवनमानमये ।।ध्रु०।।
कापि विचुम्बति तं कुलबाला,
गायतिकाचिदमु धृततालो ।।२।।
कामपिसोऽपि करोति साहसां ।
कालयति कांचन कामबिकाशाम् ।।३।।
हरि वर्णितमिदमनु रघुवीरं ।
निवसतु चेतसि सरस गम्भीरम् ।।४।।१२।।

हे सूक्ष्म उदर वाली राजकन्यके देखो यह बसन्त रितु का समय है और श्री चक्रवर्ती कुमार प्रीतम जू अद्भुत विलास कर रहे हैं । हे श्री जानकी जी एकतो तुम बढ़ती हुई अवस्था वाली

हो और तिस्पर भी तुम्हारी प्रतिष्ठा बहुत ऊँची है तुम पटरानी हो। कोई अपने कुल की मानवती सखी उन प्रीतम को विशेष करके चूम रही है और कोई बड़े सुन्दर ताल स्वरों से इन प्रीतम के गुणों को गा रही है। और किसी २ में वे प्रीतम भी अनेक प्रकार से हास्य उत्पन्न कर रहे हैं और वह हँस रही है और किसी को काम विकसित करके आप कल्लोल करते हैं। इस प्रकार यह श्री हर्य्याचार्य जी द्वारा वर्णित श्री रघुवीर जी का यह गूढ़ चरित्र अति सरस गम्भीरता पूर्वक मेरे चित्त में निवास करैं ॥१२॥

मञ्जु भाषिणी छन्दः।

श्लोक—अवगत्य भर्त्तुरनयं सखी,
मुखाद्वरवर्णिनी प्रियतमा बिदीपिता।
स्फुरितावमान परिलीढ़ मानसा,
वितताान मानमपि मंजु भाषिणी ॥१३॥

अपनी सखी श्री चारु मुखी जी के श्री मुख से श्री प्रीतम जू का अन्याय (अर्थात् श्री जानकी जी पटरानी हैं उनके आये बिना ही रास शुरू कर देना यह पटरानी पद का अपमान सूचक मान कर) पूर्ण चरित्र सुन कर प्रकाश मान श्रेष्ठ श्री विग्रह वाली श्री जानकी जी अतिशय अनुराग के प्रणय कोप से प्रज्वलित हो उठीं। अपना अपमान हृदय में स्फुरित होते ही अतिशय सन्तप्त होकर अपने मन को अपनी प्रतिष्ठा रक्षा की ऐंठ में बांध कर, अति कोमल प्रिय बोलने वाली होने पर भी सन्तप्त होकर बोलीं ॥१३॥

सीता सुख समतीता,
रामकथाभा मभासुरस्वान्ता।
दीना क्वचिदपि लीना नित्य,
प्रसादाकला चिताप्राह ॥१४॥

श्री राज दुलारी जु श्री राम कथा के प्रभाव से प्रभावित हो करके अपने सभी सुखों को अतिशय तिक्त मान कर अतिशय दुखी हो गईं अ र दीन भी हो गईं किसी एकान्तिकी स्थान में (जंगल की झाड़ी में) अत्यन्त बिलीनता से छिप गईं क्रोध की कला से युक्त होने पर भी अपनी प्रतिष्ठा सुरक्षित रखने के लिए अपनी मुख्य सखी सर्व प्रकार कुशला श्री श्रीप्रसादा जी से बोलीं कि ।।१४।।

इति श्र र्यांचार्य बिरचिते श्री जानकी गीते श्री जानकी मान विधानं नाम प्रथमः सर्गः ।।१।।

※ अथ द्वितीय सर्गः ※

श्लोक—प्राणा यदर्थं विधृताः प्रिया इमे,
सचेद् भवेदन्यरतो रघूत्तमः ।
तदा किमेतेन फलं गृहादिना,
किं यौवनेनापि च जीबितेनकिम् ।।१।।

हे प्रिये (श्रीप्रसादा जी) हे सखी मैंने जिनके लिये यह अपने इस शरीर में प्राणों को धारण कर रक्खा है वे रघुश्रेष्ठ श्री प्रीतम जू यदि अन्याशक्त हो गये तो तब मुझे इन सुन्दर महलादि भोग सामग्रियों से तथा अपनी युवावस्था से अथवा अपने जीवन से भी मुझे क्या जरूरत है । उन प्रीतम की प्रसन्नता के अतिरिक्त मेरे लिये कौन सा सुखदायक फल है ।।१।।

द्रक्ष्यामि नाथं मुनिगीत गाथं,
यदा मदा घूर्णितलोचनं तम् ।
तदा घटीः सिक्त पटीरनीरारत्नैः,
करिष्ये खचिता वयस्ये ।।२।।

हे मेरी समवयस्का प्राण प्यारी सखी श्रीप्रसादे ! यदि मैं तुम्हारी किसी भी युक्ति से अपने प्राणनाथ श्री प्रीतम जू को

अपने विषय में आशक्त हुये, मेरे अनुराग में रँगे हुये, मेरे प्रेम मद में छके, मतवाले लाल आँखों से अतिशय अनुराग में मुझे ताकते हुये, मुनि महात्माओं से जिनके गीत गाये जाते हैं उन प्रीतम को जब मैं देखूंगी तो तब हे सखी मैं तुम को अपने समस्त सखी समाज के मध्य प्रधान पट्टाभिषेक करूंगी जिसमें तुम्हारा बड़े ठाट बाट से उबटन स्नान चन्दन, कुमकुम, अंगराग तथा अनेक बिष्कीमतीय रत्नो से शृंगार के साथ बहुत बड़ा आदर अधिकार होगा ।।२।।

सम्प्रत्ययं यदपि मे न करोत्यपेक्षां,
कामानु रंजितमतिःशतपत्र नेत्रः ।
इन्दीवरावलि मनोज्ञतनोस्तथापि,
खिन्नाहमस्य न गुणान् सखि विस्मरामि ।।३।।

हे सखी कमल के समान विशाल नेत्र वाले कमल नैन श्री प्रीतम जू यद्यपि इस वक्त लीला विलास क्रीड़ाओं में आशक्ति होने से मेरी अपेक्षा नहीं कर रहे हैं मैं असीम खिन्न हो रही हूं तौ भी नील कमल के सदृश स्याम सुकुमार सुगन्धित मन रमणीय श्री विग्रह वाले महान् गुणों के समुद्र उन श्री प्रीतम जू के गुणों को मैं नहीं भूल सकती हूं ।।३।।

अल्हैया रागे—त्रितालि ताले

निर्मल मलयज चर्चितमम्बुदकान्त वपुषमनुदारम् ।
जित चपलावलि गौर बसनमति कुञ्चित कुंतल भारम् ।।१
रामरसिकमनुवादित वंशं भजति मनोमम चलदवतंसम् ।।ध्रु०
कनक मकर मय कुंडलमंडित गंडयुगल मृदुहासम् ।
मंजुल मणिगण किरण विनिर्मित यौवत हृदय बिकासम् ।।२
चन्द्रमुखोनिकरम्ब विजृम्भित सुस्मित वीक्षणलोलम ।
कंकण किंकिणि शिंजित रंजित चुम्बित युवति कपोलम् ३।।

रघुकुलभूषण रूप निरूपण मनु रचितं हरणेदम् ।
गायत रुचिर पदावलि भावदमपयापित भवखेदम् ॥४

निर्मल मलयाचल से उत्पन्न चन्दन से कुंकुम से अनुलिप्त नील मेघ सदृश प्रकाशमान मेरे कान्त का श्री विग्रह बड़ा ही उदार है । उस स्याम छटा में गोरे रंग के वस्त्र क्या ही शोभा देते हैं तिस पर भी अति घुंघुराले शिर के केश समूह के समूह मुख चन्द्र में छिटके हैं । रसिक शिरोमणि श्रीरामचन्द्र जू श्री मुख में धर के जो वंशी बजा रहे हैं मेरा मन उस मुख पर हिलते हुये अलक छुटनी पर फँस गया है । सुवर्ण कुण्डल मछलियों के आकार में बने दोनों कानों से कपोलों को स्पर्श कर अति शोभाय मान हो रहे हैं कपोल भी मन्द हास से शोभित हैं । और अनेक मणि गणों के भूषण हारादि युवतियों के हृदय को खिला रहे हैं । तथा आप भी उन चन्द्र मुखी समूह के मध्य मृदुल हास्य कुटिल कटाक्षादि से, मन्द हँसती हुई, जमुहाई लेती हुई, कटाक्ष करती हुई को ताकने में चचल होकर उस युवती के कंकण व किंकिणी के शब्द से रंजित होकर परस्पर कपोल चुम्बनादि क्रीड़ा कर रहे हैं । रघुवंसियों में भूषण के समान अद्वितीय रूप सागर के रमणत्व निरूपक यह श्री हर्य्याचार्य जी द्वारा सुन्दर रचना किया हुआ अतिशय भाव बर्द्धक सुन्दर पदावली को गान करने वाले का जन्म मरण भव खेद सम्यक प्रकार निवृत्ति हो जायगा ॥४॥

श्लोक—

ताराधिपश्चन्दन शैलवत: प्रासादराजिर्वर निष्कुटाश्च ।
मोदं ववर्षु: प्रियसंगमेन हालाहलं तद्विरहे किरन्ति ॥५॥

हे सुन्दरि श्री प्रसादे यह ताराओं का पति चन्द्रममा तथा चन्दन पर्वत का वायु ये सुन्दर महलों की पंक्तियाँ बन उपवनों के श्रेष्ठ

लताकुंजादि श्री प्राण प्रिय जी के साथ में रहने से आनन्द की वर्षा करते थे। और आज उन प्राणनाथ के वियोग में हालाहल विष की सी वर्षा कर रहे हैं ॥५॥

आसावरि—रागे त्रिताली ताले ॥२॥

सुन्दरि बिन्दति बरतनुरेषा,
कुसुम बिभूषण बिरचितवेषा ॥१॥
कापि रमते रघुपतिना चारुतर,
स्मित हृतमतिना ॥ध्रु०॥
दयित बिलोकन समुदित लज्जा,
तदपि बिशंक मदन रण शय्या ॥२॥
अनुपद संचल कुण्डलहारा,
बिगलित बसन शिथिल कचभारा ॥३॥
श्रीहरि निगदित राम बिनोदम,
कुरुत बुधाहृदि विस्मित तोदम् ॥४॥

हे सुन्दरि श्री प्रसादे ! यह कोई सुन्दर अंग वाली युवती पुष्पों के दिव्य विभूषणों से सुन्दर शृंगार करके श्री रघुपति जी के साथ सुन्दर रमण करती है अतिसय सुन्दरता से मुस्क्या कर प्रीतम के मन का हरण कर रही है श्री प्रीतम जू को ताकने में कुछ २ लजा भी रही हैं, परन्तु तौ भी मदन रण में पलंग पर निःशंक हैं। कुण्डल हारादि अंग धीमी चाल से हिल रहे हैं बस्त्र विचलित हैं, केशपाश शिथिल बिखरे हैं। यह श्री हर्य्याचार्य स्वामी जी द्वारा कहा गया श्री राम बिनोद है, विद्वान लोगों के सब व्यथाओं को दूर करने वाला यह चरित्र को अपने हृदय में धारण करो ॥६॥

श्लोक—इत्थं विशंकित निजार्चित पादरामा,
सारूपयोवनहिता चरणाभिरामा।

कोगारुणाम्बक परिस्फुरिताधरामा,
चिन्तामवाप विषमांरघुराजरामा ॥७॥

श्री जानकी जी अपने से पूजित चरण अपने श्रीप्रीतम के ऊपर इस प्रकार की शंका किये । यद्यपि आप सुन्दर रूप यौवन से अपने श्री प्रीतम का हमेशा हितमय सुन्दर आचरण ही करती हैं परन्तु इस वक्त खीझ की वजह से कमल सदृश अधरों को कम्पित करती हुई जगज्जननी श्री रघुराज रमणी विषम चिन्ता को प्राप्त हो गईं ॥७॥

इति श्री हर्य्याचार्य विरचिते श्री जानकी गीते तदन्य
विहार शंका वर्णनं नाम द्वितीयः सर्गः ॥२॥

※ अथ तृतीयः सर्गः ※

श्लोक—अथ विधुवदना बिहाय सर्वाः,
परिपणितानुपम प्रियानुरागः ।
क्वचदपि निलये निलीय रामो,
बदति वचः कृपणं विचिन्त्यमानः ॥१॥

श्री चारुमुखी जी के बचन पर ही केवल मन में विपरीत तर्कना से मान उत्पन्न हुआ है । परन्तु श्री प्रीतम तो आपके आगमन की बाट जोह रहे थे, आने में देरी का कारण समझ कर चुपचाप सभी चन्द्र वदनी समाज को छोड़कर, श्री प्रिया जू का अनुराग ही है मूलधन जिनका ऐसे अनूपम प्रियानुराग वाले श्री प्रीतम जू किसी एकान्त कुञ्ज में जाकर छिपे, और अत्यन्त चिन्तित होकर बड़ी कार्पण्यता युक्त बचन बोलने लगे ॥१॥

टोड़ी रागे—त्योरा ताले ।

जानकी मम वीक्ष्य खेलनमेषु कुंजगणेषु ।
खिद्यते धुतकान्ति चिन्तित सम्बराररिणेषु ॥१॥
गुरुतर रुषा शशिमुखी कृतासा परुषेव ॥ध्रु०॥

हा मया पदकान्ति निर्जित पंकजा विदयेन ।
नार्चिता तदहूति संचित मन्तुनाति भयेन ॥ २ ॥
यामि कामिह भामिनी शरणं तदानयनाय ।
सा यया मम वल्लभा भविता विमति शमनाय ॥३॥
हारि हारि कृत्त मे नदनुगत दाशरथी बचनेन ।
पिवत भव भयनाशि भासित भावगति रचनेन ॥४॥

इन कुंज समूहों में मेरे खेल कौतुकों को देख कर श्री मिथिलेशराज दुलारी जी खेदयुक्त हो गयीं इसी से उनके मुख की कान्ती मलिन हो गई है। अब मैं उनके बिना इस रमणीय कुंज केलि काम युद्ध में कैसे बिजई हो सकता हूं, वह चन्द्रमुखी मेरे प्रति अतिशय रुष्ट हो गईं हैं, उनको किसी ने कठोरता पूर्ण बना दिया है। अहो सब दोष मेरा ही है, मैं बड़ा भारी निर्दई हूं क्योंकि जो मैंने कमल को जीत लेने वाले लाल कोमल सुगन्धित चरण वाली श्री प्रिया जू का प्रथम पूजन नहीं किया। अर्थात पहले बुला कर आदर नहीं किया। इसी से बहुत बड़ा अपराधी मैं अब भयभीत हो रहा हूं। अब उन प्राण प्यारी जू को मनाने के लिए मैं किस बुद्धिमती चतुरी के शरण में जाऊँ। कि जिसके द्वारा वह मेरी प्राण वल्लभा अपने मनके बिपरीत भावों को शान्त कर दे। श्री हर्य्याचार्य महाराज के द्वारा रचित इस पद में प्रिया प्रेम परबश श्री चक्रवर्ती कुमार जी के मनोहर बचन रंगीले शब्दों में भरे हैं ! भाव के गति को भासित करने वाले इस पद रचना का रस पान करने से भव भय शीघ्र नाश हो जाता है ॥२॥

श्लोक—पूर्णेंदु सुन्दरमुखी चपलायताक्षी,
साचेत्कृपां न कुरुतेमयिराजपुत्री ।
तत्किंफलं प्रवरया मम राजलक्ष्म्या,
किम्वाऽनयामृदुल यौवनसम्पदाच ॥३॥

सरद पूर्ण चन्द्र सदृश सुन्दर मुख चन्द्र वाली, चंचल विशाल नेत्र वाली श्री मिथिलाधिराज पुत्री यदि मेरे ऊपर कृपा नहीं करती हैं तो तब मेरे यह अत्यन्त चढ़े बढ़े राजलक्ष्मी (महा ऐश्वर्य) से तथा नये बढ़ते हुए अति कोमल मेरे यह युवावस्था से अनेक सम्पत्तियों से क्या फल है अर्थात कुछ नहीं फल है ।।३।।

ईमनि रागे—त्रितालि ताले ।

विषम शर शर निकर कलित मृदुमानसा,
विरह दव वलित वपु रूप तपतिहानसा ।।१।।
जानकी रति बिरहिणी मम किमिह शरणम् ।।ध्रु०।।
जनक तनयां बिना मधुर मधु वासरा:,
विफल तरतां दधतिन खलु सुख हासरा: ।।२।।
कथमतुल समय ममुमरतिकर मञ्चये,
परिपतितमति गहन तमसि विपदाञ्चये ।।३।।
हरि बचसि रघुतिलक बिरह भरभूषिते,
भावमनु शीलयत शंकर मदूषिते ।।४।।

प्रेमातिशयता से श्री प्रियाजू का स्मरण करते हुये श्रीप्रीतम जू कहते हैं कि अहो वह मेरी प्रिया अति सुकुमार मन वाली इस वासन्तिक समय में मेरे बियोग से तीक्ष्ण वाणों वाले विषम बाण की शिकार बन रही कैसे सहन कर रही होगी। बिरह के प्रलयाग्नि से हा! क्या उनका सुकुमार शरीर नहीं जलता होगा ओह! श्री जानकी जी के अनुराग मय वियोग की अग्नी से ज़लते हुये अब मै किसकी शरण लेऊँ? यह अत्यन्त मधुर वासन्तिक सम्य के दिन उन श्री जानकी जी के बिना ही बीत रहे हैं। उन प्रिया जू के बिना यह बासन्तिक दिन विपरीत फलदाता हो रहे हैं सुखद नहीं हो रहे हैं। अहो! इस घोर असह्य दुःखद समय को अतिशय बेचैनी पैदा करते हुये मैं कैसे बिताऊँ। रघुबंश तिलक श्री रामचन्द्र जी के विरह भाव से भूषित, सर्व कल्याण

कारक सर्व दोष वर्जित श्री हर्य्याचार्य जी की यह वाणी को रसिक जन अपने भावना का विषय बनावैं ।।४।।

श्लोक—विधुरित वदनो विमुक्तभोगः,
स्मरशर जर्जरितान्तरः खरारिः ।
विलुठति विपिने वसन्त लक्ष्मीः,
सुभगतमे विगत प्रियान्नयभावः ।।५।।

खरारी श्री रामचन्द्रजी श्री प्रिया जी के वियोग में स्मर शर से जरजरित अन्तस्करण होकर केवल एक अपनी प्रिया श्री जानकी जी के सिवाय वासन्तिक अतिशय सुन्दर वैभव शोभा के सब सुख भोगों को छोड़ दिये । एकान्त बन में धूल से लथ पथ शरीर होकर जमीन में लोट पोट हो रहे हैं ।।५।।

बिनैव दोषान् विहितातिरोषा,
त्रिभाषितासौ परुषा बभूव ।
कोऽत्राप्युपायो भवितेति रामे,
सपागम च्चिन्तयन्ती प्रसादा ।।६।।

बिना दोषों के ही श्री प्रिया जू अतिशय क्रोध कर गई हैं, और अनेक प्रकार के कटु बचनों को कहती हुई रंज हो गई हैं, अब इस अवस्था में क्या किया जावै, कैसे श्री प्रिया जू शान्त हो जावैं इस प्रकार श्री प्रीतम जू सोच ही रहे थे कि उसी समय श्री प्रसादा जी श्री प्रीतम जू के सामने आ पहुंची हैं ।।६।।

इति श्री हर्य्याचार्य विरचिते श्री जानकी गीते श्री रघुनाथ विरह व्यथा वर्णनं नाम तृतीयः सर्गः ।।३।।

❋ अथ चतुर्थः सर्गः ❋

नारी छन्दः ।

श्लोक— वैदेही मर्मज्ञा ।
श्री रामं सावादीत् ।।१।।

श्री वैदेही जी के मर्म को जानने वाली श्री श्रीप्रसादा जी नामक सखी श्री रामचन्द्र जी से बोली कि– ॥१॥

यां बिना तव दशा विषमेयं,
राघवेन्द्र भगवन्नुपजाता ।
तां नृपेन्द्र तनयां नु तदानीं,
भामिनीं स्मृति पथं न निनाय ॥२॥

हे श्री राघवेन्द्र जू जिनके बिना आपकी यह इस प्रकार की दशा उत्पन्न हो गई है भगवन् उन श्री माननीया श्री मिथिलेन्द्र राजतनया जी का उस वक्त स्मरण क्यों नहीं किया था जबकि आप रंग समुद्र में तैरने के लिये प्रवेश कर रहे थे ? ॥२॥

नायकी रागे—त्रितालि ताले ।

शशि कर जाले पतति कराले,
विषम विषिख शर कल्पे ।
शिथिलित केशा विलुलित वेषा,
लुठति धरणि तल तल्पे ॥१॥
रघुबर सीता तड़िदति पीता,
निवसति विपिन विताने ॥ध्रु०॥
विचलित मन्दे मरुति सुगन्धे,
परितनुतेति विलापम् ।
क्वचिदति दीना सपदि विलीना,
विरस मनावति तापम् ॥ २ ॥
ध्वनदलि पुंजे बिचकिल कुंजे,
कलयति सा निज घातम् ।
रचयति वीजने बरवपु रवने,
तव चरणे प्रणिपातम् ॥ ३ ॥
हरि कविगीते रुचि परि वीते,
राघव चित्त बिदारे ।

उपरत बाधे हृदय मगाधे,
धारयताखिल सारे ।। ४ ।। ३ ।।

श्री प्रीतम जू को इस प्रकार उराहना देते हुये सखी श्री प्रसादा जी ने श्री प्रिया जू का भी प्रेम का परिचय दिया—

हे रघुबर बिजली से भी अधिक पीत वर्ण वाली श्री सीता जी घोर जंगल में एक लता के नीचे जमीन में पड़ी हुई हैं, जब चन्द्रमा के किरण समूह काम के तीक्ष्ण बाणों सदृश उन श्री प्रिया जू के अंग में लगते हैं तो तब सब अंगों के भूषणों सहित शिर के चोटी भी शिथिल पड़ जाते है अंग शृँगार सब इधर उधर बिखर जाता है, जमीन को ही पलंग मानकर लोट पोट होने लगती हैं । जब मन्द सुगन्ध शीतल वायू चलने लगता है तो तब अत्यन्त घबड़ाकर विलाप करने लगती हैं । अत्यन्त दीन होकर शीघ्र किसी एकान्त कुंज निर्वात स्थान में विलीन होकर छिप जाती हैं, अत्यन्त निरासता पूर्वक उस शीतल वायू को महाताप मानने लगती हैं । भ्रमरों से गुञ्जायमान पुष्पों से प्रकाशमान लता कुंजों की तरफ जब दृष्टि पड़ती है तो अपने आत्मघात के लिए उपाय करने लगती हैं । और कभी उस निर्जन बन में श्री प्रीतम जू की सम्पत्ति यह मेरा शरीर है अतः इसकी रक्षा करनी चाहिये ऐसा विचार कर पुष्पों से आप की मूर्ती बना कर तब आप के श्री चरणों में प्रार्थना प्रणाम करने लगतीं हैं । श्री हर्य्याचार्य जी कहते हैं कि यह रुचि परिश्रामक गीत श्री राघव जी के चित्त को विदीर्ण कारक हुआ । अतः समस्त संसार के बाधाओं का बाधक अखिल व्रह्म तत्व का सार यह चरित्र भावयुक्त अगाध हृदय से धारण करें ।।३।।

आचस्य वाचं रघुनन्दनोऽस्याः,
सीतानुरागामृत चारुवर्णाम् ।

उपरत बाधे हृदय मगाधे,
धारयताखिल सारे ।। ४ ।। ३ ।।

श्री प्रीतम जू को इस प्रकार उराहना देते हुये सखी श्री प्रसादा जी ने श्री प्रिया जू का भी प्रेम का परिचय दिया–

हे रघुबर बिजली से भी अधिक पीत वर्ण वाली श्री सीता जी घोर जंगल में एक लता के नीचे जमीन में पड़ी हुई हैं, जब चन्द्रमा के किरण समूह काम के तीक्ष्ण बाणों सदृश उन श्री प्रिया जू के अंग में लगते हैं तो तब सब अंगों के भूषणों सहित शिर के चोटी भी शिथिल पड़ जाते है अंग शृँगार सब इधर उधर बिखर जाता है, जमीन को ही पलंग मानकर लोट पोट होने लगतीं हैं । जब मन्द सुगन्ध शीतल वायू चलने लगता है तो तब अत्यन्त घबड़ाकर विलाप करने लगती हैं । अत्यन्त दीन होकर शीघ्र किसी एकान्त कुंज निर्वात स्थान में बिलीन होकर छिप जाती हैं, अत्यन्त निरासता पूर्वक उस शीतल वायू को महाताप मानने लगती हैं । भ्रमरों से गुन्जायमान पुष्पों से प्रकाशमान लता कुंजों की तरफ जब दृष्टि पड़ती है तो अपने आत्मघात के लिए उपाय करने लगती हैं । और कभी उस निर्जन बन में श्री प्रीतम जू की सम्पत्ति यह मेरा शरीर है अतः इसकी रक्षा करनी चाहिये ऐसा विचार कर पुष्पों से आप की मूर्ती बना कर तब आप के श्री चरणों में प्रार्थना प्रणाम करने लगतीं हैं । श्री हर्य्याचार्य जी कहते हैं कि यह रुचि परिश्रामक गीत श्री राघव जी के चित्त को विदीर्ण कारक हुआ । अतः समस्त संसार के बाधाओं का बाधक अखिल ब्रह्म तत्व का सार यह चरित्र भावयुक्त अगाध हृदय से धारण करें ।।३।।

आचम्य वाचं रघुनन्दनोऽस्याः,
सीतानुरागामृत चारुवर्णाम् ।

समुच्छलत्प्रेमभरः प्रयान्तुं,
तदन्तिकं संत्वरितो वभूव ॥४॥

श्री रघुनन्दन जी ने श्री सीता जी के महा अनुराग रूप अमृत से उत्पन्न (लिखे पुष्प सम) सुन्दर वर्णों में श्री श्रीप्रसादाजी के वचनों को जब सुना तो महा अनुराग समुद्र में उछल कर प्रेम जल में बुड़की लेते हुए उन श्री प्रिया जू के नजदीक में जाने के लिए अत्यन्त त्वरा युक्त हो गये ॥४॥

विप्लुष्ट चामीकर चारुकान्ति,
सम्वीक्ष्य कान्तावत राघवेन्द्रः ।
विवर्णभाः संतन वक्त्रचन्द्रां,
कृताञ्जलिर्मानवतीं बभाषे ॥५॥

जब श्रीमती श्रीप्रसादा जी श्री प्रीतम को स्वामिनी जी के नजदीक में ले गई तो तब श्रीप्रीतम जी ने श्री जानकी जी को जमीन में पड़ी हुई तपे हुये सुवर्ण के प्रकाश के सदृश सुन्दर प्रकाशवती चन्द्रमा के समान श्री मुख चन्द्र को नीचे जमीन की तरफ झुकाई हुई वियोग अग्नी से विवर्णता को प्राप्त हुई उन अपनी कान्ता को सुन्दर तरह से देख कर उन मानवती जी को हाथ जोड़ कर श्री राघवेन्द्र जी विनय करने लगे ॥५॥

काफी रागे—त्रिपालि ताले

कृपय कृपाभरणे मयि सीते,
त्वदकरुणानुभवादति भीते ॥१॥
मधु समये मातनु जानकि मानमये ॥ध्रु०॥
यद्यपि कमपि मम पश्यसि दोषम्,
अपनयतं किल न कुरु सपोषम् ॥२॥
त्वयि विनिहित मनसं दयिते माम्,
सुखय विमति विपदं वृणुते माम् ॥३॥

राम बचनमभिराम सुदारम्,
हरिभणितं परिशीलय सारम् ।।४।।

हे श्री जानकि यह बसन्त का समय है ऐसे मौके पर आप यह मान का विस्तार न करैं । हे सीते आप मेरे ऊपर कृपा करैं क्योंकि कृपा करना तो आप का भूषण ही है, सो आप के इस प्रकार करुणा (रुदन) करने पर में अत्यन्त भयभीत हो रहा हूं। यदि आप मेरे में कोई भी दोष देख भी रही हों तो मुझे क्षमा करते हुये उन दोषों को दूर कर दीजिये, और अपने मन में पुष्ट मत कीजिये । हे प्राण प्रिये मेरा मन तों हमेशा आप में ही सन्निहित रहता है अतः आप मुझे सुखी करैं, हे दयिते आप के मन के ये विपरीत बिचार मेरे लिये विपत्तियों का वर्ण कर रहे हैं । श्री रामचन्द्रजी का यह बचन बहुत ही सुन्दर तथा उदार है । श्री हर्य्याचार्य जी महाराज द्वारा संग्रह किया हुआ इस सारतत्व को अपने हृदय में हे बुध जन धारण करो ।।६।।

श्लोक—श्री राघवेन्द्र वदनेन्दु सुधांनिपीय,
प्रक्षीण तद्विरहभास्कर जाततापा ।
सम्फुल्लचित्तकुमुदा जनकात्मजासौ-
क्षीवेव विस्भृत विमानकथाबभूव ।।७।।

श्री प्रीतम के विरह रूपी तीक्ष्ण सूर्य के ताप से जल कर अति क्षीण शरीर वाली श्री जनक राज तनया जी जब श्री राघ-वेन्द्र जी के मुखचन्द्र से वर्षे हुये अमृत के समान वचन रस को पान किये तो हृदय कुमुद की तरह से खिल गया और सम्पूर्ण मान का प्रसंग सब उसी तरह से विस्मरण हो गया कि जैसे कोई मद पिया हुआ उन्मत्तता से सब अपना पराया भूल जाता है ।।७।।

कुरुतरुणि रुषंनोपताप प्रपन्ने,

भज निजविजनं तारहार स्फुरन्ती ।
स्तन कनकनगौ शातपात प्रतप्तां,
तनुमनुतनुतां भावशावल्पवत्ताम ॥८॥

श्री प्रीतम जू कहते हैं कि हे तरुणि मैं आप के वियोग ताप से सन्तप्त हुआ आप के शरण में आया हूं अब आप मेरे ऊपर क्रोध न करैं। जरी के कपड़े मणिमय हारों से प्रकाशित होने वाली आप अपने खास निजी जन का भजन करैं अर्थात क्रीड़ा स्थल में पधारैं। आपके वियोग से अतिशय सन्तप्त हुये इस शरीर को स्वर्ण शैल सम स्तन युक्त श्री विग्रह से योजित करके शीतल करैं, रसीले भावों को उत्पन्न करके विपरीतता को शान्त करैं ॥८॥

प्रणम्य पादौ जनकात्मजायाः प्रसादनं कुर्वति रामचन्द्रे
द्विपस्तथा प्रांशु जगर्जे वक्षस्तटीं यथासौ सहसास्य भेजे॥९

इतना कह कर श्री रामचन्द्र जी ने श्री जनकात्मजा जी के चरणों में प्रणाम करना ही चाहा था कि श्री जानकी जी श्री प्रीतम के प्रणाम के असमंजस में पड़ कर प्रसन्न होना ही चाहती थी कि इसी बीच में उस जंगल के बिलकुल समीप में एक जंगली हाथी बड़े जोर से गर्जा तो डर के मारे श्री जानकी जी सहसा शीघ्र उठ कर श्री प्रीतम के गले से लग गईं। दोनों जने प्रसन्नता में भींज गये ॥९॥

इति श्री हर्य्याचार्य विरचिते श्री जानकी गीते श्री जानकी
मान मोक्ष वर्णनं नाम चतुर्थः सर्गः ॥४॥

* अथ पञ्चमः सर्गः *

श्लोक—स्वागता सहचरी ततिराराद्वीक्ष्य,
तावथ विधूसरदेहौ ।

दम्पती विहरण स्पृहयालू मज्जनाय,
सरसीं प्रति निन्ये ॥१॥

श्री युगल सरकार के मेल होते ही समस्त सहचरी वृन्द शीघ्र आकर दर्शन किये, धूली से लथ पथ दोनों का श्री विग्रह देख कर तथा दम्पति की भी रुचि को जल बिहार करने की जान कर तुरन्त सब सहचरियों ने स्नान का इन्तजाम करके सुन्दर सरोवर के किनारे पर श्री युगल सरकार को लेकर पहुंच गये ॥१॥

नव पंकज रागवद्धतीरं सित पीतादि,
मणीन्द्र चित्र तीर्थम् ।
विकशत्तरू वल्लरी सुशोभां मुमुदाते,
तरुणौ सरो निरीक्ष्य ॥२॥

नवीन पद्मराग मणियों से निर्मित्र किनारा, तथा सफेद स्याम पीतादि रत्नों से चित्र विचित्र चित्रित घाटों की सीढ़ियां और सरोवर के चारों तरफ किनारों पर बागों में अनेक प्रकार के फूले फले वृक्ष लतायें अति रमणीय शोभा को देख कर तरुणावस्था के रंग में अतिशय प्रसन्न हो रहे हैं ॥२॥

आड़ा रागे—त्रितालि ताले

मानस सरसि सुगन्ध समीरे ।
बिकच कमल परि वासित नीरे ॥१॥
बिहरति सीता रघुपति युगलम् ॥ध्रु०॥
नोदित वारि विशोधित केशम् ।
चित्रित वसन विनिर्मित वेशम् ॥२॥
रत्न खचित वर मण्डन शोभम्,
संगत मुकुर विलोकन लोभम् ॥३॥
परिहित मंजुल विचकिल मालम्,
हरिरनु गायति तिलकित भालम् ॥४॥३॥

श्री सीता रघुपति जी ससमाज सरोवर में पैठ कर जल बिहार करने लगे, मन रमणीय सरोवर में सुगन्धित जल भरा है खिले हुये कमलों से पराग उड़ रहा है मन्द सुगन्ध शीतल वायू प्रवाहित हो रहा है। जल बिहार के बाद सखियों ने श्री युगल सरकार के श्री अंगों को वस्त्र से मार्जन किया, शिर के बालों को संशोधन कर दिया, चित्र बिचित्र चित्रित बस्त्रों को पहिरा दिया, अनेक प्रकार से सुन्दर शृँगार कर दिया है, रत्न जड़े हुये अनेक प्रकार के श्रेष्ठ भूषण स्याम गौर श्री अंगों में बहुत सुन्दर शोभायमान हो रहे हैं। दोनों सरकार परस्पर शृँगार सम्हारते हुये इकट्ठे होकर सर्वांगादर्श दर्पण (शीशा) में एक दूसरे की शोभा देखकर परस्पर प्रलोभित हो रहे हैं, अनेक प्रकार के खिले हुये पुष्पों के माला परस्पर बड़े हित के साथ पहराये गये हैं जो कि उर स्थलों में चमक रहे हैं, और परस्पर विशाल भालों पर तिलक किया गया है, इस प्रकार के परस्पर श्री युगल सरकार के शृँगार करते श्री हर्य्याचार्य स्वामी जी गीत गाने लगे ॥३॥

श्लोक—सच्चन्द्रकान्त स्फुरिता जिरान्तरे कुंजे,
विचित्रैः स्वनिते पतत्रिभिः ।
सख्योऽथ तीर्थादुपनीतनाथाः,
समाययुर्मन्थर पादपाताः ॥४॥

॥ रास मण्डप का बर्णन ॥

जहाँ की भूमी आगन चन्द्रकान्त मणिका बना हुआ चन्द्रमा सदृश प्रकाशमान है, चारों तरफ चित्र बिचित्र प्रकाशमान अनेकों प्रकार के कुँज हैं जिनमें चित्र बिचित्र अनेक प्रकार के पक्षियों का विविध कल्लोल मचा हुआ है। सखियां दोनों सरकारों के स्नान शृँगार करा करके मन्द मन्द चाल से बन शोभा को देखते हुये चले आ रहे हैं ॥४॥

सहोपविष्टौ मृदुलाच्छ संस्तरे,
विदीप्त जाम्बूनद पीठके प्रियौ ।।
तौ भोजयामासुरमन्द सौरभैः,
प्रपानकैर्मौक्तिक मोदकैश्चताः ।।५।।

प्रथम कलेऊ कुँज में आकर वहाँ पर कोमल बिछावन बिछे हैं तप्त स्वर्ण सदृश प्रकाश पुंज सिंहासन पर दोनों सरकारों को एक साथ सखियों ने बड़े आदर से बैठाया अतिशय सुगन्धित मोतीचूर के लड्डू आदि अनेक पदार्थ दोनों सरकारों को पवाया ।।५।।

प्रक्षाल्य पाणी मुख पंकजे पुनः,
सख्यर्पितैरम्बुभिरीश्वरौ मुदा ।
ताम्बूलवोटी परिरंजिताननौ,
पीठे परस्मिन्वभतुः सुवीजितौ ।।६।।

फिर सखियों ने झारियों से जल अर्पण किया दोनों सरकारों ने हाथ धोये आचमन अचवन किया, शुद्ध वस्त्र से हाथ मुख मार्जन हुआ, बड़े आनन्द के साथ दोनों ईश्वरों को सखियों ने पान का बीड़ा अर्पण किया । पान के बीड़ों से रँगे मुखचन्द्र युक्त दोनों सरकार रास मण्डप के मध्य सिंहासन पर आकर विराजमान हुये, दोनों सरकार आपस में एक दूसरे को प्रेम से पंखा कर रहे हैं । सखियों ने दोनों सरकारों को छत्र चँवर व्यजनादि से सेवा किया ।।६।।

सख्यः समशित फेलाः प्रमुदित,
बेला स्तिरस्कृताप्सरसः ।
आत्मप्रिय नवशोभां लोकन,
लोभा कृति विदधुः ।।७।।

सखियां अपनी सुन्दरता से स्वर्ग के अप्सराओं का

तिरस्कार करती हुई अतिशय आनन्द में भरी हुई श्री युगल सरकार की प्रसादी पा करके अपने आत्मा से भी अधिक प्रिय दोनों सरकारों की नित्य नवीन शोभा को दर्शन करते हुये अतिशय प्रलोभित चित्त से रास रंग के अनुकूल समय जान कर उसी अनुकूल आरती आदि कृत्यों को किया ।।७।।

विहाग रागे—एकतालि ताले ।

जनकसुता सहितं रघुराजम्,
अधि सिंहासन मति सुख भाजम् ।।१।।
कापि नीरा जयति परा, मणि
दीपावलि ललित करा ।।ध्रु०।।
काचन मृदु वादयति मृदंगम्,
झल्लरि कामपि कपिसुरंगम् ।।२।।
उदयति भूषण निकर मरीची,
लसति सखीषु च कौतुकबीचीं ।।३।।
हरिबचनं सरसीकृत रामम्,
कुरुत बुधा हृदयेदित कामम् ।।४।।

महासुख रस के भोक्ता रास रसिकेश्वर—

श्री मिथिलेश राजदुलारी जू के सहित अवधेश राज दुलारे जू रास मण्डप मध्य अतिशय रमणीय रत्न सिंहासन पर जब विराजमान हुये तो तब कोई परम सुन्दरी श्रेष्ठ सखी अपने सुन्दर कर कमलों में मणिमय रत्न वर्तिकाओं से सजी आरती के थाल को लेकर आरती कर रही हैं। कोई सखी बड़े मधुरता से मृदंग को बजा रही हैं तथा कोई झाल बजा रही हैं। कोई सखी सुन्दर स्वरों को मिलान करती हुई बीणादि बाजाओं को बजा रही हैं। श्री युगल सरकार के अंग भूषणों से आरती करने पर अद्भुत प्रकाश किरण बिखर रहे है, जो कि सखियों के समाज में महान कौतुकों की लहरों को उत्पन्न करा रही हैं, जिन कौतुक

लहरों से सखियों का समाज बहुत ही शोभायमान हो रहा है। श्री हर्य्याचार्यजी महाराज जी के श्री बचनों को अतिशय सरस करने वाले श्री सीताराम जी को विद्वान रसिक जन अपने हृदय में प्रवेश करावैं जिससे श्री युगल सरकार सब प्रकार के मनोरथों को पूर्ण कर देते हैं ॥८॥

श्लोक—अथोपतस्थे जनकात्मजा विभुं,
रासाभिलाष स्फुर दन्तरं पतिम् ।
स्मितावलोकादृतमुज्वलस्मितं,
सुमण्डिता केलिकला सुपण्डिता ॥९॥

रास करने की अभिलाषा से अत्यन्त प्रफुल्लित है अन्त स्करण जिनका, तथा श्री प्रिया जू के सर्व मनोरथ पूरक दृष्टी के चितवनी से महान आदर को प्राप्त हुये श्री प्रीतम जू शृंगार रस बर्द्धक मुसुक्यान से, केली के कलाओं में महा पण्डिता सुन्दर शृंगार सजी हुई सब सखियों के मध्य श्री जनकराज तनया जू बहुत रूपधारी श्री प्रीतम के वाम भाग में बिराजमान हुई ॥९॥

सख्यस्तु तावद्वर रासमण्डली,
मुपागताश्चारु शिलादयोऽखिलाः ।
वादित्र गीतादिभिरात्म नाथयोः,
प्रवर्त्तयामासुरमुः सुनर्त्तनम् ॥१०॥

इस प्रकार रास रसोतसुक दोनों सरकारों की समयानुकूल सेवा से लिये समस्त सखियों में परम मुख्य सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जू से लेकर जितनी भी सखियाँ हैं सब उस श्रेष्ठ रास मण्डप में उपस्थित हो गईं, तब तक वाद्य नृत्य गानादि संगीत आरम्भ करके अपने आत्मनाथ दोनों सरकारों के लिये इस प्रकार से सुन्दर नृत्य को आरम्भ कर दीया ॥१०॥

केदार रागे—यात्रा ताले।

विशद राकेशकर निकर निर्मल विपिन,
कान्ति सन्तान रंजित कनक भास्वरे।
विकशदरविन्द मधुगन्ध मंजुल मलय,
वातपरिपात संशमित विरह ज्वरे ॥१॥
नटति रघुनायको रासरस चत्वरे ॥ध्रु०॥
सुषिर ततघन मिलित परमुरज रवमये,
ललित मंजीरवर शिंजित मनोहरै।
तत्तथै तत्तथै निनद शोभित वदनचन्द्र,
तरुणी निचयकर बिधुतिमोदरे ॥२॥
वाम दक्षिण वलित युवतियुग परिकलित,
बाहु रघुनाथ तनुवृन्द सुन्दरतरे।
विमल कलगान हृतमान सुरनर्तकी निवह,
वर्णित निगम गीत नर्तनभरे ॥३॥
कुन्द मन्दार मकरन्द सौरभ चपल,
भृंग निकुरम्व झंकार जनितस्मरे।
श्रीहरि चकोर पति हृदय हर कौमुदी,
सान्द्रतर जानकी राम मुख विधुवरे ॥४॥११

श्री चक्रवर्ती कुमार श्री राघवेन्द्र जू रास मण्डप मध्य चत्वर में नृत्य कर रहे हैं। निर्मल सरद पूर्ण चन्द्र के किरण निर्मल बनों में फैलने से बन की कान्ती जगमगा रही है, वही किरण समूह दिव्य स्वयं प्रकाशमान रास मण्डप में भी परिरजित हो रहे हैं। कमल समूह सब विकसित हो गये, मधु की सुगन्ध पुष्प परागादि सुगन्ध को लेकर तथा मलय चन्दन सुगन्ध को लिये वायू के बहने से, शीतल स्पर्श से विरह की जलन शान्त हो रही है। हवा के बाजा वन्शी आदि, तार के बाजा वीणादि

काँसे के बाजा झालरादि, चर्म वाद्य मृदंगादि सब मिल कर तथा और मुरजादि बाजों का स्वर एक मेल होने से तथा उनके मञ्जीर नूपुर किंकिनियों की आवाज बढ़ी ही मनोहर हो रही है। श्री प्रीतम श्याम सुन्दर जू के बहुत रूप होने पर भी प्रत्येक रूप के बाँये तथा दक्षिण दोनों तरफ में दो दो युवति सुशोभित हो रही हैं, जो कि बड़ी ही सुन्दरता से सुसज्जिता, श्री प्रीतम जू को आलिंगन की हूई हैं। तथा कभी दोनों तरफ भुजाओं को अरुझा कर नृत्य कर रहे हैं, आनन्द की लहरों में नृत्य के साथ तैरते हुये ताथेइ तत्ताथेई इस प्रकार के नाद बड़े ताल स्वर के साथ हो रहे हैं, चन्द्रमा के सदृश मुख वाली चन्द्रवती युवती समूह कभी २ दोनों भुजाओं को उठाकर अंगुली मरोरादि हावभावों से नृत्य कर रहे हैं, इसी प्रकार श्री प्रीतम के भी चेष्टायें बराबर हो रहे हैं, इस प्रकार श्याम गौर २ मण्डल की अद्भुत सुन्दर झांकी रस वर्षा रही है। रासमण्डप के मध्य जो निर्मल वेद सम्मत नृत्य गीत गाये जा रहे हैं उन्हें सुन कर स्वर्गलोक की सभी नृत्य करने वालियों का अभिमान हरण हो रहा है। साथ ही साथ कुन्द मन्दारादि पुष्पों की सुगन्धि में चञ्चल हुये भ्रमरों का गीत झंकार भी स्मरोत्पादक हो रहा है। पति के हृदय को हरण करने वाली श्री जानकी जी का मुख चन्द्र मण्डल मधुर प्रकाश में तथा श्री जानकी हृदय हर श्रीराम मुखचन्द्र मण्डल मधुर प्रकाश के श्री हर्य्याचार्य स्वामी जी चकोर होकर देख रहे हैं ॥११॥

श्लोक— बींणा वांणी सुन्दरीवृन्द मुख्या,
ख्याता सद्भिर्लक्षणैः कुंज देवी।
वीक्षां चक्रे राघवं भावसारा,
रासोल्लासा जानकी दिव्यचीवीं ॥१२॥

बीणा सदृश मधुर वाणी से बोलने वाली, सुन्दरी सह

चरी समाज में मुख्या, पटरानी पद प्राप्ता, तथा सज्जनों द्वारा सत लक्षणों से प्रसिद्धि को प्राप्त हुई, श्री रासविलास कुंजों की सर्व प्रधान कुँज देवी, श्री प्रीतम जू की प्रसन्नता ही है भाव का सार जिनका, ऐसी श्री जानकी जो महारास उल्लास के आवेश में दिव्य रस का मूल धन जो श्री बिग्रह है, श्री राघवजी के लिये दृष्टि विषय किये ।।१२।।

निर्गत्य निर्गत्य ननर्त रामः, सीताप्यखण्डादथ रासमण्लात् ।
पुनश्च तत्रैव जगाम योगं, हारादिवाछिन्न गुणान्मणीन्द्रः ।।१३

इस प्रकार नृत्य करते हुये श्री सीतारामजी के उस अखण्ड रास मण्डल में से दोनों प्रिया प्रीतमों का बार २ समय २ पर मण्डल से बाहर निकल २ कर अनेक कौतुक बिहार करते हुये फिर उसी रास मण्डल में मिल जाना, इसकी कैसी शोभा होती है कि जैसे प्रकाशमान रत्नों का हार टूट कररत्न बिखर गये हों फिर तुरन्त जुट गये हों ।।१३।।

इति श्री हर्य्याचार्य विरचिते श्री जानकी गीते रास बिलास वर्णनं नाम पञ्चमः सर्ग ।।५।।

* अथ षष्टः सर्गः *

इत्थं स्वलास्योदित साधु माधुरी,
पूर्णान्तरास्ता वनिता रघूत्तमः ।
अरीरमत्कुञ्ज चयेषुचातुरी चार्य्याञ्चिता,
कामकला विचेष्टितैः ।।१।।

अपनी रसमयी हाव भावादि रास रंग बर्द्धक चेष्टाओं द्वारा उत्पन्न दिव्य महामाधुर्य्यता से परिपूर्ण हृदय वाली केलि कला पण्डिता उन बनिताओं ने अनेक प्रकार के अद्भुत चातुर्य्यता के भाव मय चर्य्या (कृत्यों) से प्रीतम को ऐसा प्रसन्न किये कि जिससे रघुश्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी उन अत्यन्त रमणीय

कुञ्जों में सभी रमणियों के साथ बहुत रूप धारण करके रमण करते हुये नहीं अघाते हैं ।।१।।

विद्युद्धनांगौ घन विद्युदम्बरौ, श्री जानकी दाशरथी मुदालयः।
उदीर्ण गन्धैर्ल्यजनै रमन्दैः, सिषेविरे साधुभिरम्बुभिश्च ।।२।।

गौर वर्णा श्री जानकी जी नील वस्त्र पहिरे, श्याम वर्ण श्री चक्रवर्ती कुमार श्रीराम जी पीत वस्त्र पहिरे हुये, रास मण्डल में नृत्य करते हुये तथा कुंज २ के केलि कौतुकों में बिजली तथा मेघ की तरह से सुशोभित हो रहे हैं। इन दोनों के अनुराग रंग के आनन्द में मग्न हुई सखियों ने अनेक प्रकार सुगन्धित पदार्थ भोजन, अतर, पान, पुष्प पर्य्यंक, व्यजन (पंखा), जल वस्त्रादि श्रेष्ठ सामग्रियों से सुन्दर हाव भाव पूर्वक अनुराग से सब तरह की सेवा किया ।।२।।

प्राचीरेण प्रांशुना दीप्यमानं, मल्लीक्लृप्तेनापि सत्तोरणेन ।
यातौ कान्तौ पुष्पचन्द्रातपाढ्यं, भावक्षुब्धौ कौसुमं चित्रगेहम्।३

वे रमणीय कुञ्ज सूर्य सदृश प्रकाशमान हैं, इसी प्रकार उन कुञ्जों के द्वार कलश खम्भावली तोरण वितान बिछावन सब पुष्पमय चन्द्रमा सदृश प्रकाशमान बड़े ही सुन्दर हैं, सब प्रकार के विलास सामग्रियों से युक्त विलास योग्य हैं। इस प्रकार के चित्र विचित्र कुंजों में विलास रंग में भीजे हुये दोनों सरकार प्रवेश किये।३

सोरठि रागे—एकतालि ताले

विरचित रति समरोचित शयने,
धामनि विविध कुसुम कृत चयने ।
विहरति रामो जनकजया;
मदन तरल मति रमित मया ।।ध्रु०।।
विधुरपि चुम्बित बिधुमनु पालम्,
वलयति कनकलतापि रसालम् ।।२।।
अरुण सरोरुह युगमति वेलम्,

कोकयुगोपरि रचयति खेलम् ॥३॥
मन्थर वपु रुररीकृत कम्पा,
असित घनोरि निवसति शम्पा ॥४॥
हरि भणितं रघुराज बिहारम्,
कुरुत बुधा हृदि मधुरिम सारम् ॥५॥

प्रत्येक कुञ्जोंमें मदन रंग से भीजे मन वाले श्री राम चन्द्र जी श्री जनकजा जी के साथ अनन्त शौन्दर्य का स्वाद लेते हुये बिहार कर रहे हैं। वे विहार कुञ्ज के पर्य्यंक विविध प्रकार के पुष्पों से अनेक प्रकार की सुगन्धी युक्त रीति से निर्मित रति समर के योग्य अतिशय रुचि कर रचे हुये हैं। अपने अमृत से एक दूसरे को पालन करने वाले दो चन्द्रमा एक दूसरे को चूम रहे हैं, (यह श्री प्रिया प्रीतम के दो मुख चन्द्रमा हैं) इसी प्रकार उत्तम स्वर्ण की लता अतिशय रस स्वरूप रसाल (आम) के वृक्ष को लपेट रही हैं (यह श्री प्रिया प्रीतम का आलिंगन है), दो चक्रवाकों के ऊपर दो लाल कमल अद्भुत अतिशयता से खेलों की अनेक रचना करते हैं (ये दोनों सरकारों के वक्षस्थल व कर कमल हैं)। ॥ विपरीत विलास॥ अचल शरीर हैं तो भी बिजली नील मेघ के ऊपर कम्प को विस्तार करती हुई निबास कर रही है (यह युगल श्री विग्रह ही विद्युत मेघ हैं)। श्री हर्य्याचार्य जी द्वारा वर्णन किया हुआ श्री चक्रवर्ती कुमार श्री राम जी का बिहार अमृत का भी सार है अतः विद्वान लोग हृदयंगम् करैं ॥४॥

श्लोक—रामस्यजातु परिसेवित सन्नितम्वा,
वक्षस्युपाहित कुचास्थभुजोपधाना।
कंठे समर्पितभुजा वदने धृतास्या,
श्रीजानकी कुसुम चापधुतापि शेते ॥५॥

श्री राम जानु से सुसेवित सुन्दर नितम्बवती, वक्षस्थल,

परस्पर मिलित, मुखचन्द्र व भुजा ही उपधान बने हुये कण्ठ में भुजा समर्पित हैं जिनके एवम्भूता अपने श्री मुखचन्द्र को श्री मुखचन्द्र में धारण कर कुशुम शर ताड़िता भी शयन झांकी से सुशोभित श्री जानकी जी हैं ॥५॥

सुरतरुरनुगजनानां सुरत, रूचिर जनक तनुजायाः।
रघूपति रतिकमनीयः कौशिल्या, हृदय नन्दनो जयति ॥६॥

श्री जनक तनया रघुपति जी के प्रति कमनीय रुचिवर्द्धक सुन्दर सुरति रति विलास आश्रित जनों के लिये मनोरथ सफल कारक कल्पवृक्ष के समान हैं। इस प्रकार के श्री कौशल्या नन्द बर्द्धक श्री सीताराम युगल सरकार की जय हो ॥६॥

पर्ज रागे—त्रितालि ताले

जय रघुनन्दन जगदभिवन्दन जय जय जनकसुते।
जय बर निगमगदित गुण संचय जय जय भुवननुते ॥१॥
जय जय दाशरथे जय जानकी ॥ ध्रु० ॥
जय जित दूषण मुरकुल भूषण जय जय हरिदयिते।
जय कविकमल विरोचन सुन्दर जयजय निखिलहिते ॥२॥
जय दशमुख तृण निकर हुताशन जयजय युवतिमणे।
जय जनसदय हृदय सकलेश्वर जयजय नत चरणे ॥३॥
जय निज सेवकगण भवनाशन जयजय पुरुकरुणे।
वस हरि वचसि विमल रस धारिणि जय २ महित गुणे ॥७

हे दाशरथे श्री चक्रवर्ती कुमार आपकी जय हो जय हो, हे श्री जानकि आपकी जय हो। हे जगत वन्द्य श्री रघुनन्द जी आप की जय हो; हे जनक सुते आप की जय हो जय हो। हे वेद वर्णित सुन्दर समूह वाले श्रीराम जी आप की जय हो, हे सर्व लोकेश्वर पूजित चरण वाली श्री जानकी जी आप की जय हो जय हो। हे दूषणादि राक्षसों के सहित समस्त दोषों, दूषणों को नाश करने वाले तथा हे देब लोकों के कुल

भूषण स्वरूप श्री राम जी आप की जय हो, हे श्रीराम प्रिया आपकी जय हो जय हो। हे कवि के हृदय कमल को खिलाने वाले सूर्य के समान प्रकाशमान अति सुन्दर श्री राम जी आपकी जय हो, हे सबका हित करने वाली श्री जानकी जी आपकी जय हो जय हो। हे सकुटुम्ब दशमुख रावण रूप जंगली घास को भस्म करने के लिए प्रलय अग्नी रूप श्री चक्रवर्ती कुमार श्री रामजी आपकी जय हो, हे समस्त युवतिगणों में सर्वोत्तम रत्न रूपा श्री जानकी जी आपकी जय जय हो जय हो। हे आश्रित जनों में सुन्दर दया करने वाले सबके ईश्वर आपकी जय हो। हे सकलेश्वर से नमस्कृत चरण वाली श्री जानकीजी आपकी जय हो जय हो। हे अपने सेवक समूहों का जन्म मरण छुड़ाने वाले आपकी जय हो, हे पूर्ण करुणा सागरी जी आपकी जय हो जय हो। निर्मल रस की गंगधारा सदृश श्री हर्य्याचार्य स्वामी जी की बाणी में हे प्रीतम आप निवास कीजिये, हे प्रभो आपकी जय हो, हे महान्गुणों की समुद्र भूते आपकी जय हों जय हों ।।७।।

श्लोक—विद्या विभूषणयुतो हरिरञ्जनाभ,
पादारविन्दमधुपो यदिदं व्यधत्त ।
श्रीजानकी चरितगीतमुदग्रभावा,
स्तत्साधवः प्रतिदिनंमुदिताः पिबन्तु ।।८।।

यदि जो कोई यथार्थ तत्व रूप विद्या विभूषण से भूषित हृदय वाले विद्वान होय, और चतुष्पाद विभूती रूप कमल है नाभी में जिनके ऐसे त्रिपादूर्ध्व उत्तम पुरुष हिरण्यनाभ श्रीराम जी के चरणों रूपी कमल का जो कोई भ्रमर होय तो, तथा श्री जनक-राज तनया जी के सुन्दर चरित्रों में यदि अत्यन्त बढ़ा चढ़ा भाव हो तो तब श्री सीताराम रस प्राप्ती के साधन सम्पन्न रसिक भक्तजन आनन्द मगन होकर इस श्री सीताराम रासरस अमृत को निशिदिन नित्य प्रति प्रीती से पान करैं ।।८।।

इति श्री सीताराम रस रास रंग बर्द्धिनी टीकायां षष्टः स्सर्गः ।।६।।

समाप्तोऽयं श्री जानकी गीत नामक प्रबन्धः ।

बन्दे शिरसा सरस वसन्ते सीता सह श्रीरामम् ।
सरयू पुलिने मणि गण रमणे बिद्युत्युत घनस्यामम् ।।
विपिन निकुंजे प्रफुलित कञ्जे प्रमदा गणमभिरामम् ।
वल्ली द्रुम भबने श्रमकन समने शोभिततनु सतकामम् ।।
करि रिव करिणीनां विहरंतं केलि कला गुण ग्रामम् ।
ललना लीला मां खलु लुब्धं मम दृग लाभ ललामम् ।।
कर्पूरागरू केशर सलिले रमतं रति रसधामम् ।
मन्मथ मथने यत्ने निपुणं कान्ता कृतभुज दामम् ।।
नव रँग मुकुरे मधुकर निकरे पिव मुखरे विश्रामम् ।
बिगलित कच कुच सुरति सुधीरं रमणी धृतभुज वामम्।।
शीतल मन्द सुगन्धित पवने काम कला कमनीयम् ।
पद्मासने रसिक गिर गीतं रमणी रस रमणीयम् ।।
कोकिल कीर कुरंग विलासे बाला मुख नवरूपम् ।
परमानन्दे सखिजन वृन्दे नायक गण गुण भूपम् ।।
रितु पति काले परमरसाले इत्थं नित्य विलासम् ।
कृपानिवास वदंति मे हृदि भो कुरु कान्ता सहवासम् ।।

* अथ श्री मज्जानकी पञ्चकम् *

श्री जनकनन्दन्यैनमः ।। स्मरामः प्रातः श्री जनकतनया ।
चन्द्रवदनं । ललाटे श्रीखण्डं जलजनयनंराममुकुरम् ।।
श्रवस्ताटंकाचं भृकुटि कुटिलं कुन्द दशनं,
कपोल श्रीपाण्डुं फलदमरुणोष्ठं स्मितहसम् ।। १ ।।

मैं प्रातःकाल उठकर श्री जनकतनया जी के चन्द्रमा सदृश मुख चन्द्रमा का स्मरण करता हूं जिस मुख चन्द के ललाट में श्री खण्ड चन्दन का तिलक कमल के सदृश विशाल नेत्र,

श्रीराम जी के मुख देखने के दर्पण सदृश सुन्दर पांडू फलसम कपोल तथा कानों में ताटंक, अलकावली, तथा धमुषाकार भृकुटी कुन्द पुष्प सदृश दन्त पंक्ती, बिम्ब फल सदश अरुण अधर, मन्द मुसुकान युक्त हैं ॥१॥

स्मरामः प्रातः श्रीमिथिल नृपकन्याकरयुगं,
सपद्मं सौवर्णांगदबलयमंगुष्ठसुयवम् ।
नखांशुप्रावालं तल बिजय सिन्दूर निचयं,
घनश्यामस्पर्शं सुमणि कटकां गुल्यबिधरम् ॥२॥

मैं प्रातः श्री मिथिलाधिराज लड़ैती जी के दोनों करकमलों का स्मरण करता हूं । जो करकमल नीलकमल को पकड़े हैं, सुवर्ण का बिजायठ पहिरे हैं, इसी प्रकार सुन्दर रत्नों के कंकण, चूड़ी, अंगूठी धारे हुये हैं, अंगूठे में जौ का चिन्ह धारे हैं, नख पंक्ति का प्रकाश तथा कर तालु में की लालिमा सिन्दूर के समूह को जीतने वाली तथा अरुण प्रकाशमान मूँगा तथा सूर्य की अरुणाई को हरती है तथा श्री प्रीतम की श्याम छबि स्पर्श से हाथ के भूषण अधिक शोभित हो रहे हैं ॥२॥

सदानौमिप्रातः क्षितिपसुतपल्यंघ्रियुगलं,
पयः फेनस्निग्धंनवकमलपत्रारुणजितम् ।
स्फुरल्लाक्षारागं धुसृण मसृणंनूपुरधरं,
ध्वजाविन्द्वब्जेष्वंकुशपवि धनुश्चिन्हमतुलम् ॥३॥

मैं नित्य प्रति श्री चक्रवर्ती कुमार श्रीरामजी की पत्नीजी के युगल चरण कमलों को नमस्कार करता हूं । जो चरण दूध फेन सम चिक्कन नवीन खिले लाल कमल की अरुणाई को जीत रहे हैं । तथा महावर धारण किये हुये तथा नूपुरों की धुम्रँण मम्रण शब्द करते हुये और चरण तालू में ध्वजा बिन्दु, कमल, बाण, अंकुश, बज्र, धनुषादि ४८ चिन्ह अद्भुत धारण किये हैं ॥३॥

हृदि ध्यामः प्रातः सुयवसुकमारांकुरजितां,
विशालांसीतायाः कनकनववल्लीमपजयाम् ।
स्रजापुष्पैर्मुक्तैःसगलमणिरत्नैरुपचिताम् ,
तडिन्मुर्त्तिपूर्तिभूवनजनकामाम्भगवतीम् ।।४।।

चौदहों भुवन के आश्रित जनों के मनोरथों को पूर्ण करने वाली षड्ऐश्वर्य सम्पन्ना श्री मिथिलेश राजनन्दनी जी के दिव्य जौ के अंकुरों की सुकुमारता को जीतने वाले तथा विशाल नवीन स्वर्णलता को पराजित करने वाले और उत्तम मणि रत्नों हार व मुक्ता जूही चमेली आदि पुष्प मालाओं से सुशोभित उर स्थल कण्ठादि वाले, कोटि विद्युत चमत्कार को पराजित करने वाले श्री विग्रह को मै प्रातःकाल अपने हृदय में ध्यान करता हूं ।।४।।

द्व्यंब्रूमः प्रातर्गतवयसिसीताक्षरमिदं,
जगद्भव्यंभदिव्यंवभयदलंमंत्रविपुलम् ।
चतुर्णांसंजन्यं बिधिहरिहरैर्ज्ञेयमनिशम् ,
त्रयीविद्यादातृसुखद मथसेव्यंमुनिजनैः ।।५।।

मैं प्रातःकाल में शुद्ध सतोगुणी हृदय से 'सीता' यह दो अक्षर वाले महा मन्त्र का उच्चारण करता हूं ? जो महामन्त्र संसार को उत्पन्न पालन प्रलय तथा भवभय नाश करने वाला है, सभी वेद प्रतिपाद्य मन्त्रों में महामन्त्र है जिस महामन्त्र को नित्य प्रति रात दिन श्री ब्रह्मा विष्णु महेश जान्तेव जपते हैं तथा चतुर विद्वान जिस महामन्त्र को संञ्चित करके धारण करते हैं, जो महामन्त्र-वेद त्रय तथा तत्वत्रय, रहस्यत्रय, मकारत्रय और विद्यात्रय करके १२ तत्वों का यथार्थ स्वरूप प्रकाश प्रदान करने वाले हैं, आत्म परमात्म दिव्य सुख तादा है, ऐसा जान करके ही इस सीता महामन्त्र को मुनिजन हमेशा जप ध्यानादि द्वारा सेवा करते हैं ।।५।।

इदंपञ्चश्लोकंव्युषसिमनुजोमानसफलं,
धनापत्यंराज्यंलभतिपतिवीरं पतिपरा।
सुपुत्रंसुप्रज्ञांद्विजकुलमभीष्टं हरिपुरीं,
पठेद्भक्त्याध्यात्वा रहसि वचसांग्रेणहृदये ।।६।।

प्रातःकाल उठ कर नित्य प्रति जो कोई मनुष्य इन पांच श्लोकों को हृदय से बड़े भाव सरसता पूर्वक ध्यान करते हुए वाणी से पढ़ेगा तो उसके मानसिक समस्त फल, धन, पुत्र, राज तथा पति परायण स्त्री सुन्दर वीर पति को सुन्दर पुत्र, सुन्दर बुद्धी, ब्राह्मण घर जन्म, भगवत धाम प्राप्ती हो जायेंगे ।।६।।

इति श्रीसिद्धेश्वरतंत्रे श्रीरामलक्ष्मणसंवादे श्रीजानकीप्रातः पञ्चकम् ।

❋ श्रीमद्रामपञ्चकम् ❋

प्रातः स्मरामि रघुनाथ मुखार विन्दं,
मन्दस्मितं मधुर भाषि विशाल भालम् ।
कर्णावलम्बिचल कुण्डल शोभि गण्डं,
कर्णान्त दीर्घ नयनं नयनाभिरामम् ।।१।।

मैं प्रातःकाल श्री रघुनाथ जी के श्री मुख कमल का स्मरण करता हूं, जो मुख कमल मन्द मुस्कयान युक्त हैं, मधुर बोली, विशाल भाल, कानों में कुण्डल हिलते हुये अति शोभायमान कपोल, कान पर्यन्त विशाल नेत्र, अतिशय प्रिय दर्शन हैं ।।१।।

प्रातर्भजामि रघुनाथ करार विन्दं,
रक्षोगणायभयदं वरदं निजेभ्यः ।
यद्राज संसदि विभंज्य महेश चापं,
सीता करग्रहण मंगल माप सद्यः ।।२।।

मैं प्रातःकाल श्री रघुनाथ जी के श्री करकमलों का स्मरण करता हूं जो कर कमल राक्षस गणों को भय देने वाले तथा अपने